छोटा ख्याल :- मध्य लय में गाया जाने वाला गीत छोटा ख्याल कहलाता है, यह ख्याल शैलि का प्रकार है प्रायः तीनताल, झपताल, एकताल आदि तालो में निबद्ध गीत जिसे मध्य गति में गाया जाता है तथा उसी लय में छोटे-छोटे आलापों एवं तानों के द्वारा इसका मराव किया जाता है इसे छोटा ख्याल कहते हैं। इसकी भाषा अधिकतर ब्रज भाषा है, इस गीत प्रकार में अधिकतर श्रृंगार एवं भक्ति एवं विरह भाव के पद गाये जाते हैं।

ध्रुपद :- उत्तर भारतीय संगीत में ध्रुपद शैली प्रौढ़ शैली के रूप मे माना गया है। इस गीत शैलि का विकास पन्द्रहवी सदी के ग्वालियर नरेश राजामान सिंह तोमर के प्रयास से हुआ। प्रबन्ध गीत में परिवर्तन के बाद ध्रुपद का स्वरूप स्थापित किया गया। भारतीय संगीत में पाँच सौ बरसों तक यह गीत प्रचार में रहा, यह गीत अधिकतर चौताल, आड़ाचाड़ताल, झपताल, सूलताल कभी कभी तीनताल में निबद्ध मिलते हैं, इसके स्थाई अन्तरा, संचारी एवं आभोग चार चरण हुआ करते थे। वर्तमान समय में अधिकतर इसके स्थाई और अन्तरा दो ही चरण के ध्रुपद गायक गाते हैं। मुगलकाल में ध्रुवपद गायक को कलावंत कहा जाता था, तानसेन, बैजु, बक्सु, स्वामी हरिदास आदि ध्रुपद गायक ही थे, वर्तमान समय मे जयपुर के ध्रुपद गायक एवं डागर घराने के मलिक

ठुमरी → यह ख्याल शैली का भाव प्रधान शैली है
शृंगार प्रधान इस गीत में राग की शुद्धता पर
ध्यान नहीं दिया जाता है। स्वभाव से यह
चंचल प्रकृति का है गीत प्रायः काफी, खमाज
देश, भैरवी, तिलक कामोद आदि रागों में ही प्रायः
ठुमरी गायी जाती है। ठुमरी की उत्पत्ति नृत्य गीत
से हुई है, जिसमें ठुमकते हुए गीत के भाव प्रदर्शित
किये जाते थे विद्वानों का कथन है, की लखनऊ
के नवाब वाजिद अली शाह ने ठुमरी को
प्रोत्साहित किया, आगे चलकर भारतीय संगीत
में बनारस, लखनऊ, गया तथा पंजाब की ठुमरी
शैली सामने आयी/बनारस की ठुमरी ख्याल
अंग से बोल बनाव के साथ गायी जाती है,
वहीं पंजाब की ठुमरी शैली में स्थानिय स्थानीय
प्रभाव है, जहाँ विपरीत स्वरों के साथ तैयारी में
स्वर लगाव ठुमरी गायिकी में एक अलग रोचकता
पैदा करती है गया की ठुमरी में स्थानीय लोक
शैली का पुट रहता है विशेष कर बिहार के
मल्लिक घराने के ध्रुपद गायक इस शैली की
ठुमरी गाते है यह गीत दीपचन्दी, जत आदि
तालों में आरम्भ होकर कहरवा के द्रुत रूप में
समाप्त होती है

Scanned with CamScanner